विद्या -भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग-पंचम, विषय -हिंदी,

दिनांक-21-06-2021 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

पाठ-7 चेतक (कविता)

सुप्रभात बच्चों,

आज की कक्षा में कविता पाठ करने दिया जा रहा है-

आज कविता और गुण से परिपूर्ण है। इस कविता में राणा प्रताप के अमर घोड़े चेतक की वीरता का गुणगान हुआ है। हल्दी घाटी के युद्ध में चेतक की भूमिका वीरता एवं साहस का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करती है कि वह युगो- युगो से प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

रण - बीच चौंकड़ी भर -भरकर

चेतक बन गया निराला था ।

रण प्रताप के घोड़े से,

पड़ गया हवा का पाला था।

गिरता न कभी चेतक- तन पर,

राणा प्रताप का कोड़ा था।

वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,

या आसमान का घोड़ा था।

जो तनिक हवा से बाग़ हिली,

लेकर सवार उड़ जाता था।

राणा की पुतली फिर नहीं,

तब तक चेतक मुड़ जाता था ||

कौशल दिखलाया चालो में,

उड़ गया भयानक भालों में।

निर्भीक गया वह ढालो में,

सरपट दौड़ा कर बालों में||

आज के लिए इतना ही, शेष अगले कक्षा में।

गृहकार्य-

दिए, गए कविता याद करें।